सम्पूर्ण क्रांति :

समाजिक परिवर्तन के स्वरुप को परिभाषित करते हुए जयप्रकाश ने सम्पूर्ण क्रांति का आगाज किया। केवल शासन व्यवस्था को बदल देने से समाज का उद्धार नही होगा। इसके लिए जे.पी ने युवा शक्ति का आह्वान किया और कहा कि ~~क्रांति~~ भ्रष्टाचार, भुखमरी, बेकारी, मंहगाई और समाजिक और आर्थिक अन्यायों के खिलाफ उत्साह और जोश के साथ लड़ना पड़ेगा। ~~इसके लिए युवाओं से कहा कि "सिंहासन खाली करो कि जनता एकजुट होकर क्रांति करें~~। ~~क्रांति~~ तभी लोक जन का कल्याण होगा।

जे.पी. ने इसके लिए सम्पूर्ण क्रांति का उद्घोषणा किया। जून 1975 में बीरापुर लान में जे.पी ने कहा "मैंने यह आंदोलन खड़ा नही किया। जिस तरह धरती के गर्भ से ज्वालामुखी फुटता है उसी तरह भारतीय समाज के गर्भ से यह सहसा फूट पड़ा है। किसी भी क्रांति को कोई नेता पैदा नही करता, वह अपने आप पैदा हुआ करती है। उसे सही दिशा में ले जाने का काम नेता करता है। क्रांति तो पागल हाथी की तरह है। उसे अंकुश में रखना होता है और सही रास्ते पे ले जाना होता है। किसी व्यापक लोक आंदोलन का वातावरण भी अपनी इच्छा के अनुसार उत्पन्न नही किया जा सकता। ऐसा वातावरण तो तभी तैयार होता है जब कुल मिलाकर आम जनता में असंतोष, हताशा और मोहभंग की स्थिति बन जाती है। सत्तासीन एवं समाज के विभिन्न वर्गों के बीच एक खाई-सी खड़ी हो जाती है

सम्पूर्ण क्रांति की साधना के लिए जयप्रकाश ने स्वयं कठिन परिक्रमा किया और लोक आंदोलन का नेतृत्व किया। सम्पूर्ण क्रांति शब्द के सम्बंध में जे.पी ने कहा कि "मेरे मुहँ में पहली बार सहज ही सम्पूर्ण क्रांति शब्द निकल पड़े थे।

सम्पूर्ण क्रांति के दूरगामी उद्देश्यों के विषय में जे. पी ने कहा सही मायने में व्यवस्था बदले के लिए एक क्रांतिकारी कदम है। इन्ही उद्देश्यो और चिंतन के आधार राष्ट्र की बिगडती हुई दशा को सुधारने के लिए व्यवस्था बदलने पर जोर दिया और सम्पूर्ण क्रांति एक नारा बन गई।

सम्पूर्ण क्रांति एक नारा है, भावी इतिहास हमारा है।

व्यवस्था को बदलने के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित किये गये। जिसमे मुख्य रूप से आर्थिक क्षेत्र में क्रांति, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रांति, शैक्षणिक क्रांति, आध्यात्मिक क्रांति बौद्धिक क्रांति, सांस्कृतिक क्रांति इत्यादि।

सम्पूर्ण क्रांति का अर्थ "सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में बदलाव" है। ऐसा बदलाव जिसमें कोई दोष बाकी न रहे। सब कुछ बदल जाय और आम आदमी सुखी हो जाय। यही जे. पी के सम्पूर्ण क्रांति का सपना था। इस सपने में

(I) <u>राजनीतिक क्रांति</u>- इसका उद्देश्य राजनीति में क्रांति लाना है।

I- चुनाव हेतु उम्मीदवारों का चयन केन्द्रीय तथा राज्य संसदीय समितियों द्वारा नही किया जाना चाहिए। उम्मीदवार का चयन जन समितियों द्वारा किया जाना चाहिए।

II- दल-बदल के विरोध में एक व्यापक कानून बनें।

III- दल-बदल भारतीय राजनीति के लिए एक कैंसर है। किसी भी व्यक्ति को राजनीतिक पद पर दो बार से अधिक आसीन होने की अनुमति नही होनी चाहिए

IV- विधायिका, सरकार, विश्वविद्यालयों एवं निजी क्षेत्रों में उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों को समय-समय अपने संपत्ति का ब्यौरा देना चाहिए।

V- जो जनप्रतिनिधि अपने क्षेत्र में अधिकांश मतदाताओं का विश्वास खो चुका है। उन्हे वापस बुलाने का प्रावधान है

VI- सेना तथा पुलिस को सरकार के इन आदेशो को नही मानना चाहिए जो स्पष्ट रूप से गैर कानूनी हो।